

उत्तरांचल शासन
कृषि एवं कृषि विपणन अनुभाग,
संख्या-583/ XIII/06-4(19)/02
देहरादून दिनांक 26 सितम्बर, 2006

कार्यालय आदेश

श्री डी0के0 शर्मा, तत्कालीन सहायक निदेशक, क्षेत्रीय मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, उधमसिंहनगर सम्प्रति सहायक निदेशक, मृदा परीक्षण, कृषि निदेशालय, देहरादून द्वारा अपने कार्यकाल में उर्वरक रसायन खरीदने से पूर्व रसायनों की जांच न करने, रसायन की खरीददारी सरकारी संस्था या राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित फर्म से न कर निजी फर्म से खरीदने, मैक्रोमोड योजना के तहत उर्वरक, कीटनाशी गुणात्मक नियन्त्रण उपकरणों के सही संचालन हेतु क्रय किये गये ए0सी0 को लैब में न लगाते हुए अपने कक्ष में लगाने, बैच सं0-201/66 के एक ही जनपद से दो विभिन्न उर्वरक निरीक्षकों द्वारा आहरित नमूनों की विश्लेषण रिपोर्ट में भिन्नता दिखाने, जिक्र सलफेट 21 प्रतिशत उर्वरक नमूनों के राज्य स्तरीय एवं रैफ्री प्रयोगशाला में विश्लेषणोपरान्त अंकित जिक्र तत्व की उपलब्धता में भारी अंतर पाये जाने, बैच सं0-201/81 एवं 201/82 के अवशेष उर्वरक की मात्रा में उर्वरक नियन्त्रण आदेश 1985 की धारा 29 का उल्लंघन कर स्वयं की इच्छा से केन्द्रीय उर्वरक नियन्त्रण प्रयोगशाला, फरीदाबाद से मनमाने ढंग से विश्लेषित कराकर वास्तविक तथ्यों को छिपाने, उच्च अधिकारियों को गलत सूचना देकर दिग्भ्रमित करने में बरती गई गम्भीर अनियमितताओं के लिये उनके विरुद्ध उत्तरांचल, सरकारी सेवक (अनुशासन एवं अपील) नियमावली 2003 के नियम-7 के अनुसार कार्यालय आदेश सं0-2185/04-4(19)/02, दिनांक 02-2-2005 द्वारा अनुशासनिक कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए श्री गौरीशंकर, संयुक्त कृषि निदेशक, कुमायूं मण्डल, हल्द्वानी को जांच अधिकारी नामित किया गया।

2- जांच अधिकारी द्वारा अनियमितताओं के संबंध में श्री शर्मा को दिये गये आरोप-पत्र, उसके के संबंध में श्री शर्मा से प्राप्त उत्तर एवं साक्ष्यों के आधार पर की गई जांच आख्या अपने पत्र सं0-2149/जांच/डी0के0 शर्मा/2005-06, दिनांक 04-2-2006 द्वारा शासन को उपलब्ध कराई गई। जांच अधिकारी से प्राप्त जांच आख्या की प्रति श्री शर्मा को शासन के पत्र सं0-220/XIII-1-06-4(19)/02, दिनांक 22 मार्च, 2006 से दिये जाने के उपरान्त उनसे प्राप्त अभ्यावेदन सं0-मेमो/2005-06, दिनांक 31-3-2006 के आधार पर प्रकरण की स्थिति निम्नवत बनती है:-

आरोप सं0-1

श्री शर्मा जब वह वर्ष 2002-03 एवं 2003-04 में सहायक निदेशक, क्षेत्रीय मृदा परीक्षण/विश्लेषण राज्य उर्वरक गुण नियन्त्रण प्रयोगशाला, उधमसिंहनगर में कार्यरत थे, उन्हें जिक्र सलफेट

उर्वरक के जनपद उधमसिंहनगर के दो नमूने बैच सं०-201/66 नमूना सं०-7 एवं के-8 विश्लेषण हेतु उपलब्ध कराये गये, जिसमें नमूना एन-7 मानक पाया गया तथा के-8 अमानक पाया गया था। स्वयं श्री शर्मा द्वारा अमानक घोषित नमूना रैफरी लैब को विश्लेषण हेतु भेजा गया तथा रैफरी लैब की विश्लेषण रिपोर्ट में उक्त नमूना 21 प्रतिशत पर मानक पाया गया, जबकि श्री शर्मा को उक्त नमूना रैफरी लैब कृषि निदेशक की अनुमति के उपरान्त भेजना चाहिये था, जो उनके द्वारा नहीं किया गया, अतः यह आरोप श्री शर्मा पर आंशिक रूप से पर्यवेक्षीय दायित्व के अन्तर्गत कार्य न करने तक सिद्ध होता है।

आरोप सं०-2, 3 व 4 श्री शर्मा पर सिद्ध नहीं होते हैं।

उक्त सिद्ध पाये गये आरोप सं०-1 के लिये श्री शर्मा को पर्यवेक्षीय दायित्व में आंशिक रूप से दोषी पाये जाने के लिये उन्हें वर्ष 2005-06 के लिये निम्न तथ्यात्मक प्रतिकूल प्रविष्टि देते हुए श्री राज्यपाल महोदय उनके विरुद्ध प्रचलित इस अनुशासनिक कार्यवाही के प्रकरण को एतद्वारा समाप्त किये जाने की अपनी सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं।

“श्री शर्मा जब जनपद उधमसिंहनगर में सहायक निदेशक, मृदा परीक्षण/विश्लेषण प्रयोगशाला में कार्यरत थे, उन्हें उपलब्ध कराये गये दो नमूनें जिसमें एक मानक तथा एक अमानक पाया गया। अमानक पाये गये नमूनें को बिना कृषि निदेशक की अनुमति के रैफरी लैब को विश्लेषण हेतु भेजे जाने के लिये श्री शर्मा को इस आशय की प्रतिकूल प्रविष्टि दी जाती है।”

(ओम प्रकाश)
सचिव।

संख्या-583/XIII/04-4(19)/02-तददिनांक

प्रतिलिपि निम्न के सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

- (1) कृषि निदेशक, उत्तरांचल, देहरादून।
- (2) अपर कृषि निदेशक, पौड़ी/संयुक्त कृषि निदेशक, कुमायूं मण्डल, हल्द्वानी।
- (4) श्री डी०के० शर्मा, सहायक निदेशक, मृदा परीक्षण कृषि निदेशालय, देहरादून।
- (5) गार्ड फाईल/एन०आईसी०